403/

नाम : तूबा जमाल

निर्देशक : डॉ. कहकशां ए. साद

विभाग : हिन्दी

विषय : हिन्दी-उर्दू की स्त्री आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन

शोध-सार

आत्मकथा आज के साहित्य की सबसे लोकप्रिय और सशक्त विधा है। व्यक्ति के देखे भोगे जीवन को व्यक्त करने की शक्ति इसमें होती है। आत्मकथाएँ हमारी स्वयं के प्रति और उस समय के प्रति जागरूकता को दर्शाती है जिसमें हम रह रहे होते हैं। साथ ही हमें मानवीय स्थितियों को बेहतर ढंग से समझने में सहायता करती हैं। हाल के वर्षों में स्त्री आत्मकथाओं ने विशेष महत्व प्राप्त कर लिया है।

हिन्दी-उर्दू आत्मकथाओं का विकास तथा इनके स्वरूप का अध्ययन किया गया है पहले पहल आत्मकथा तुर्की तथा फारसी भाषा में ही लिखी गयी। स्वाधीनतापूर्व हिन्दी आत्मकथा का विकास अत्यन्त धीमी गति से दिखाई पड़ता है। स्वातंत्र्योत्तर काल में आत्मकथाएँ एक विधा के रूप में लिखी जाने लगीं। समकालीन संदर्भ में आत्मकथाएँ अपने चरमोत्कर्ष पर हैं तथा समाज के हर वर्ग द्वारा लिखी जा रही है चाहे वह लेखक हो या फिर राजनीतिज्ञ या कलाकार विशेषकर स्त्रियों द्वारा लिखी जा रही है। जो कुछ उनके साथ घटित हो रहा है वह उसे अपनी लेखनी के माध्यम से साकार कर रही है।

स्त्री विमर्श के विविध आयामों पर स्त्री विमर्श में नारी मुक्ति आंदोलनों की विवेचना की गयी है कुछ दार्शनिकों ने स्त्रियों को पुरुषों के समकक्ष रखने की चेष्टा की है। स्त्री मुक्ति आंदोलनों के समय ही स्त्रियों के अधिकार के प्रश्न उभरकर सामने आये। इन नारीवादी आंदोलनों तथा इससे उपजी जो शाखाएँ प्रशाखाएँ फूटती गयीं उस पर चर्चा की गयी।

लेखिकाएँ अपनी आत्मकथाओं में पितृसत्ता का विरोध करती नजर आ रही हैं। हिन्दी-उर्दू आत्मकथा की लेखिकाएँ कदम-कदम पर पितृसत्तात्मक समाज में होने वाले अन्याय को चुनौती देती हैं।

जब स्त्रियों में शिक्षा के द्वारा सुधार होना शुरू हुआ तो उसमें जागृति आयी और नारी मन पितृसत्तात्मक समाज के निणर्यों और मर्यादाओं को त्यागकर इससे मुक्ति चाहने लगा। हिन्दी-उर्दू आत्मकथाओं में नारी मन का अंर्तद्वन्द्व जगह-जगह पर परिलक्षित होता है। एक तरफ पितृसत्तात्मक सरोकार स्त्री को विद्रोह से रोकता है तो दूसरी ओर उसका अर्न्तमन असमानता की बेड़ियों से मुक्त भी होना चाहता है।

सामाजिक स्तर पर हिन्दी-उर्दू आत्मकथाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। लिंगभेद की समस्या का सामना समाज के हर वर्ग की स्त्रियों को करना पड़ता है। विवाह में स्त्रियों की मुख्य समस्या है उन्हें अभी भी वर चुनने की स्वतंत्रता नहीं है तलाक भी सामाजिक समस्या है जो हिन्दू और मुस्लिम दोनों समुदाय में व्याप्त है भारतीय समाज तलाकशुदा स्त्रियों को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखता इसलिए पीड़ा और उत्पीड़न स्त्री के हिस्से में ही आती है।

यौन हिंसा एक घृणित अपराध है स्त्रियों को खासकर इस समस्या का सामना करना पड़ता है। हिन्दी और उर्दू आत्मकथाकारों ने पूरी दृढ़ता से इसका विरोध करते हुए अपनी आत्मकथाओं में इसे उद्घाटित किया है। आत्मकथाकार लेखिकाओं को राजनैतिक स्तर पर अनेक चुनौतियों का सामना करना

पड़ा।

आर्थिक स्तर पर हिन्दी-उर्दू की आत्मकथाकार लेखिकाओं को बहुत-सी समस्याओं का सामना करना पड़ा। नौकरी के स्तर पर हो या रोजगार के स्तर पर इन आत्मकथाओं में बताया गया है स्त्रियों को आर्थिक स्तर पर सक्षम होने पर भी कितनी कठिनाइयाँ उठानी पड़ती है।

राजनैतिक जागरुकता होने पर भी स्त्रियों मार्ग में कदम-कदम पर रोड़े अटकाए गए चुनाव में उम्मीदवारी होने पर भी तथा पद प्राप्त कर लेने के पश्चात् भी स्त्री होने के कारण कोई महत्त्व नहीं दिया जाता। कुछ अपवादों को छोड़कर भारतीय सन्दर्भों में स्थितियाँ लगभग यही हैं।

पांच शीर्ष बिन्दु :

- स्त्री-मुक्ति
- पितृसत्ता का विरोध
- समानता का अधिकार
- नारी मन का अन्तर्द्वन्द्व
- आर्थिक निर्भरता

हिन्दी-उर्दू की आत्मकथाओं की लेखिकाओं की समस्याएँ लगभग एक जैसी ही हैं उन्हें पितृसत्तात्मक समाज से कदम-कदम पर चुनौती लेनी पड़ती है अपने वजूद को स्थापित करने के लिए। पितृसत्तात्मक समाज द्वारा स्त्रियों के लिए बनाए गए कायदे कानून लगभग एक जैसे ही हैं इन हिन्दी-उर्दू आत्मकथाओं की लेखिकाएँ इन नियम कायदों को चुनौती देती नजर आ रही हैं।